ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v5.i12.2017.482

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Arts

डुग्गर भित्तिचित्रों का धार्मिक स्वरूप

अपर्णा श्रीवास्तव [*1]
[*1] रिसर्च स्कॉलर, डी.ई.आई., दयालबाग, आगरा

सारांश :– कला का प्रधान लक्ष्य सौन्दर्य की अनुभूति है। कलाओं में सौन्दर्यानुभूति की सृजनात्मक अभिव्यक्ति की उत्पत्ति मानव सभ्यता के आदि काल से ही धार्मिक आध्यात्मिक कलाकृतियों की रचना के कारण सम्भव हुई है। धर्म एवं कला दोनों ही मानवीय जीवन को व्यवस्थित एवं संगतिपूर्ण बनाते हैं तथा मानवीय जीवन के महान सत्य को प्रस्तुत करती है। कला तथा धर्म ने एक दूसरे के निहितार्थ प्रेरणा का कार्य किया है।

कला की धार्मिक अभिप्यक्ति के सन्दर्भ में जम्मू की डुग्गर संस्कृति का विशेष महत्व है जहाँ कला ने धार्मिक अभिव्यक्ति के प्रकटन हेतु विविध स्वरूपों का विकास किया, जिनमें से भित्ति चित्रण प्रमुख है। डुग्गर संस्कृति के भित्ति चित्रों में लोगों की धार्मिक भावना का साकार रूप दृष्टिगोचर होता है, जिसका उदेश्य धर्म का प्रचार एवं अतीत का सरंक्षण करना है। डोगरा कलाकारों ने वहाँ के बाहय सौन्दर्य के वशीभूत होकर ही कला की उद्भावना नहीं की अपितु उसकी अन्तः प्रेरणाओं और उसके भीतर प्रसुप्त दैवीय विश्वासों के बल ने इनके विचारों व भावों को रंग, रूप, वाणी और अभिव्यक्ति प्रदान की है। डोगरा राजाओं की धार्मिक प्रवृत्ति की अभिव्यक्ति का प्रस्तुतीकरण हमें इन डोगरा राजाओं के वास्तु सम्बन्धी कृतियों यथा–गुफा, मन्दिरों एवं महलों में निर्मित भित्तिचित्रों में दृष्टिगोचर होते हैं डोगरा कालीन इन भित्ति चित्रों में हिन्दू धर्म की अवधारणा के अन्तर्गत विभिन्न निर्माण हुआ है।

मुख्य शब्द – डोगरा, भित्तिचित्र, धार्मिक, मन्दिर, कलात्मक अध्ययन

Cite This Article: अपर्णा श्रीवास्तव. (2017). "डुग्गर भित्तिचित्रों का धार्मिक स्वरूप." *International Journal of Research - Granthaalayah*, 5(12), 135-140. 10.29121/granthaalayah.v5.i12.2017.482.

प्रस्तावना

कला का प्रधान लक्ष्य सौन्दर्य की अनुभूति है। कलाकृति में यह सौन्दर्य रूप के माध्यम से प्रकट होता है एवं सौन्दर्य से उत्पन्न आनन्द ही रस कहा जाता है। सौन्दर्य की यही रसानुभूति संसार का एक सत्य है और कला इसे अमरत्व प्रदान करती है एवं सत्य की अनुभूति में ही आनन्द समाहित है और अनुभूति के इसी आनन्द का नाम ही सौन्दर्य है। कलाओं में सौन्दर्यानुभूति की सृजनात्मक अभिव्यक्ति की उत्पत्ति मानव सभ्यता के आदि काल से ही धार्मिक आध्यात्मिक कलाकृतियों की रचना के कारण सम्भव हुई है। धर्म एवं कला दोनों ही मानवीय जीवन को व्यवस्थित एवं संगतिपूर्ण बनाते हैं तथा मानवीय जीवन के महान सत्य को प्रस्तुत करती है। कला तथा धर्म ने एक दूसरे के निहितार्थ प्रेरणा का कार्य किया है।

कला की धार्मिक अभिव्यक्ति के सन्दर्भ में जम्मू की डुग्गर संस्कृति का विशेष महत्व है जहाँ कला ने धार्मिक अभिव्यक्ति के प्रकटन हेतु विविध स्वरूपों का विकास किया, जिनमें से भित्ति चित्रण प्रमुख है। डुग्गर संस्कृति के भित्ति चित्रों में लोगों की धार्मिक भावना का साकार रूप दृष्टिगोचर होता है, जिसका

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.1133824

उदेश्य धर्म का प्रचार एवं अतीत का सरंक्षण करना है। डोगरा कलाकारों ने जम्मू कश्मीर के बाहय सौन्दर्य के वशीभूत होकर ही कला की उद्भावना नहीं की, अपितु उसकी अन्तः प्रेरणाओं और उसके भीतर प्रसुप्त दैवीय विश्वासों के बल ने इनके विचारों व भावों को रंग, रूप, वाणी और अभिव्यक्ति प्रदान की है। डोगरा राजाओं की धार्मिक प्रवृत्ति की अभिव्यक्ति का प्रस्तुतीकरण हमें इन डोगरा राजाओं के वास्तु सम्बन्धी कृतियों यथा–गुफा, मन्दिरों एवं महलों में निर्मित भित्तिचित्रों में दृष्टिगोचर होते हैं डोगरा कालीन इन भित्ति चित्रों में हिन्दू धर्म की अवधारणा के अन्तर्गत विभिन्न निर्माण हुआ है।

चित्र सं.–1, भगवान श्री राम के युवराज्याभिषेक की तैयारी– यह चित्र जम्मू शहर, पुरानी मण्डी के रघुनाथ जी मन्दिर में चित्रित है। यह चित्र 19वीं शताब्दी में चित्रित माना जाता है। महर्षि वाल्मीकि प्रणीत रामायण रामकथा को विस्तृत एवं व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करने वाला प्रथम ग्रन्थ है। प्रस्तुत चित्र प्रसंग सुप्रसिद्ध आदि कवि वाल्मीकि कृत महाकाव्य रामायण के अयोध्याकाण्ड से उद्धृत है। यह चित्र जम्मू के डोगरा कालीन भित्ति चित्रों की प्रमुख विषयवस्तु में से एक है। डोगरा चित्रकारों ने इस दृश्य में लघु चित्र शैली की भांति चित्र के हाशिये में पुष्प एवं लताओं के अलंकरणों का सुन्दर समन्वय किया है। इस दृश्य में भगवान श्रीराम को सिंहासन पर आसीन दर्शाया है, एवं लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न उनके समक्ष खड़े हुए हैं।

चित्र सं.–1

डोगरा कलाकारों ने विषय की दिव्यता को प्रदर्शित करने हेतु चित्र में श्रीराम के दिव्य स्वरूप को दर्शाने हेतु आभामण्डल एवं स्वर्ण सिंहासन के साथ गौण रूप से प्रथम पूज्य भगवान श्री गणेश, शिव, ब्रह्म एवं अन्य देवताओं को खड़े हुए दिखाया है जो इस अद्भुत क्षण के साक्षी हैं। इस चित्र में परिप्रेक्ष्य एंव आनुपातिक मानव आकृतियाँ दृष्टिगोचर हो रही है। इस चित्र में स्वर्ण का सिंहासन एवं दरबारियों के वस्त्राभूषणों में विभिन्न रंगों का समृद्ध प्रयोग हुआ है। इस दरबार के दायीं ओर एक छोटे से कक्ष में राजा दशरथ को अपने दैदीप्यमान सिंहासन पर आसीन दिखाया है। इस दृश्य में भगवान श्री राम, लक्ष्मण एवं शिव को श्याम वर्ण से दर्शाने के लिए मुख मण्डल के साथ सम्पूर्ण शरीर में नीले वर्ण का प्रयोग किया गया है। इस कक्ष में हरे तथा श्वेत वर्ण के सुन्दर फूलों का कालीन है। इस चित्र के द्वितीय भाग में राजा दशरथ सिंहासन पर आसीन है तथा राजा दशरथ की तीन रानियों को उनके सामने खड़े दिखाया गया है। सम्पूर्ण दृश्य में श्रीराम के राज्याभिषेक की तैयारियों का वर्णन है जहाँ तीनों रानियाँ अगली सुबह होने वाले आयोजनों के लिए राजा दशरथ से संवादरत हैं, इस दृश्य को चित्रित किया गया है।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.1133824

चित्र सं.–2, कालिया मदमर्दन– यह चित्र जम्मू के सुई सिम्बली ग्राम के रघुनाथ जी मंदिर के प्रांगण में स्थित सन्त प्रेमदास की समाधि की भित्तियों पर चित्रित है तथा 19वीं शताब्दी में चित्रित हुआ माना जाता है। चित्र में भगवान श्रीकृष्ण अपने गोपालकृष्ण स्वरूप में कालिया नाग के घमण्ड का दमन कर यमुना के विषैले हो चुके जल की शुद्धि कर कालिया नाग के फणों पर नृत्यरत चित्रांकित है। इस चित्र में कालिया नाग का उठता फण घमण्ड का, श्रीकृष्ण का फणों पर नृत्य करना नाग के मद का दमन का, एवं दूषित जल यमुना के विषैलेपन का प्रतीक है जिसके अन्तर्गत डोगरा चित्रकारों ने चित्र की प्रतीकात्मकता के माध्यम से समाज की विकृति पर आधात हेतु पौराणिक सन्दर्भ को प्रस्तुत कर अपनी धार्मिक एवं परिमार्जित शैली का परिचय दिया है।

चित्र सं.–2

इस चित्र को दो वर्गों में चित्रित किया गया है, एवं प्रथम वर्ग में कालिया नाग से भयभीत नगर के ग्वालों को भागते हुए और समीप ही गायों, व नगर को दर्शाने हेतु –भवन का चित्रण किया गया है। द्वितीय वर्ग में कालिया दमन के दृश्य में कालिया नाग की सभी पत्नियाँ भगवान श्रीकृष्ण से प्रार्थना करती हैं कि वे कालिया को, प्राणदान कर उनके सुहाग की रक्षा करें। सभी नागिन पत्नियाँ कमल पुष्प अर्पित कर श्रीकृष्ण को प्रसन्न करने का प्रयत्न करती हुई चित्रित हैं। चित्र में प्राथमिक वर्ण योजना के चटक रंगों का सौम्य प्रभाव प्रयुक्त है तथा हाशियों में पुष्पलताओं का अलंकरण अत्यन्त सुन्दर प्रतीत हो रहा है। सम्पूर्ण दृश्य श्वेत पृष्ठभूमि में निर्मित है। चित्र में नाग आकृति भी अलंकृत है। चित्र में नारी (नागिन) आकृतियों की वेशभूषा व मुख मुद्रा पहाड़ी शैली से प्रभावित है। चित्र में विविध प्रकार की रेखाओं का आनुपातिक संयोजन चित्र की सौन्दर्यवृद्धि कर विषयगत सौन्दर्य को सिद्ध करता है। चित्र में चित्रित हाशिये स्तम्भ का आभास रूप प्रदर्शित कर रहें हैं। चित्र में यमुना जल की वृत्ताकार रेखाओं से नदी की गति प्रदर्शित हो रही है जिसमें राजस्थानी शैली का (नाथद्वारा, कोटा) प्रभाव परिलक्षित होता है।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.1133824

चित्र सं.–3, श्रीगणेश अपनी पत्नियाँ रिद्धि–सिद्धी के साथ– यह चित्र जम्मू तहसील के रघुनाथ जी मन्दिर में महन्त के बैठक में चित्रित है। यह चित्र 19वीं शताब्दी में चित्रित माना जाता है। प्रस्तुत चित्र में भगवान गणेश को अपनी दोनों पत्नियों के साथ वार्ता करते हुए चित्रित किया गया है। गणेश की दोनों पत्नियाँ रिद्धी एवं सिद्धी बुद्धि तथ ज्ञान का प्रतीक हैं। गणेश पुराण में श्रीगणेश के अवतारों का विस्तृत वर्णन है उवं गणपत्या सम्प्रदाय विशेष रूप से भगवान गणेश को समर्पित है। भगवान श्रीगणेश को पुराणों, वेदों एवं भारतीय संस्कृति में अनेक संज्ञा दी गई है यथा–मयूरेश्वर, गजानन, धूम्रकेतु, वक्रतुण्ड, लम्बोदर, एकदन्त इत्यादि।

चित्र सं.–3

भगवान श्रीगणेश मुख्यतः विघ्नहर्ता के रूप में सुप्रसिद्ध हैं अर्थात् वे अपने भक्तों पर आने वाले प्रत्येक कष्टों तथा बाधाओं को दूर कर उनकी मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं। इस दृश्य में श्रीगणेश को पद्मासीन, चतुर्भुज एवं उनकी दिव्यता दर्शाने हेतु आभामण्डल दर्शनीय है। चित्र में एकदन्त धारी श्री गणेश की ग्रीवा में सर्प का चित्रांकन उन्हें शिवपुत्र के स्वरूप में दर्शाता है। चित्र में श्री गणेश की दोनों पत्नियों की वेशभूषा में बशोहली शैली का प्रभाव एवं लोक कला प्रदर्शित है।

चित्र में लोककला सदृश्य रंगों की आभा–पीला, गेरू व लाल का प्रयोग डोगरा चित्रकरों की लोक संस्कृति को भी प्रदर्शित करता है साथ ही यह भी स्पष्ट किया गया है कि श्रीगणेश भारतीय हिन्दू संस्कृति के गणमान्य ईश्वर हैं अर्थात् श्री गणेश को प्रत्येक जन संस्कृति में प्रथम पूज्य ईश्वर के रूप में प्रसिद्धी प्राप्त है। चित्र के आन्तरिक अलंकरण में फूल तथा पत्तियों का सरलीकृत किन्तु सौन्दर्यपूर्ण अभिव्यक्ति को रेखाओं की लयात्मकता के द्वारा व्यक्त किया गया है। यह अलंकरण श्वेत पृष्ठभूमि में लाल तथा हरे वर्ण से चित्रित है। चित्र के बाहरी अलंकरण में केवल पत्तियों के सरल किन्तु प्रभावशाली रेखांकन में नीले वर्ण से पूर्ण किया गया है। चित्राकृतियों का शारीरिक गठन अपेक्षाकृत लोककला से प्रभावित प्रतीत होता है। इस चित्र की वर्ण सघनता की स्थिति आज भी अच्छी स्थिति में है।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.1133824

चित्र सं.–4, श्रीकृष्ण एवं राधा– यह चित्र रघुनाथ जी मन्दिर, मुरार, चक्क, जम्मू में चित्रित है तथा इसका समय 19वीं शताब्दी बताया जाता है। प्रस्तुत चित्र में राधा एवं श्रीकृष्ण की वार्तालाप का दृश्य है। इस चित्र में श्रीकृष्ण अपनी प्रियतमा राधा के साथ वार्ता कर रहे हैं एवं नीचे के दृश्य में विरहिणी नायिका का दृश्य है जिसके समीप एक सुन्दर मृग चित्रित है। यह चित्र कृष्ण एवं राधा के प्रेम प्रसंग पर आधारित है। भारतीय पहाड़ी चित्रकला में वैष्णव धर्म सम्बन्धी अनेक चित्र निर्मित हैं। डॉ. एम.एस. रंधांवा ने पहाड़ी चित्रकला पर सन् 1956 ई. में "कृष्णा लीजैण्ड इन पहाड़ी पेण्टिंग" नामक प्रसिद्ध कृति की रचना की है। इसके अतिरिक्त वैष्णव धर्म पर अनेक प्रसिद्ध कृतियों का निर्माण किया गया है, तथा वैष्णव धर्म पर आधारित सन्दर्भों के आधार पर ही पहाड़ी लघु चित्र शैली तथा डोगरा कालीन भित्ति चित्रण में अनेक चित्रमालाओं का निर्माण किया गया है।

चित्र सं.–4

डोगरा कालीन भित्ति चित्रण शैली पर सर्वाधिक प्रभाव पहाड़ी शैली की लघु चित्रकला का दृष्टिगोचर होता है। इस चित्र में पूर्णतः कांगड़ा शैली का प्रभाव दृष्टव्य है। यह प्रभाव हमें आकृतियों की सजीवता तथा स्त्री आकृतियों का शारीरिक सौन्दर्य कोमल व छरहरे बदन, रोमांटिक तथा दृश्य प्रधानता, नायिका का श्रृंगार पक्षीय भाव, हाशियों का पतला होना, चित्र में भवन का चित्रांकन इत्यादि में दर्शनीय है। इस चित्र में आलेखन एवं चित्र योजना में कल्पना का प्रयोग किया गया है। इस प्रकार दार्ष्टिक परिप्रेक्ष्य का अभाव झलकता है। चित्रित आकृतियों की अंग भंगिमाओं एवं हस्त मुद्राओं का सजीव एवं गतिपूर्ण अंकन परिलक्षित है। स्त्री आकृतियों में अद्वितीय सौन्दर्य, शालीनता और संयम प्रदर्शित है। इस प्रकार चित्र में नारी आकृतियों को बड़ी ही विलक्षणता से अंकित किया गया है। लम्बी पतली भवें, चमकीली आँखें, अण्डाकार भरे हुए चेहरे, पतली कमर, लम्बी पतली अंगुलियाँ चित्रित की गई हैं। इस चित्र में लयात्मक रेखाएँ तथा रमणीय अंगों के कोमल संयोजन से नयनाभिरम्यता का गुण विद्यमान है। चित्र में लाल, पीला तथा हरे वर्ण की विभिन्न बलों का सुन्र संयोजन सम्पूर्ण दृश्य की रमणीयता को प्रदर्शित करता है।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.1133824

निष्कर्षः–उत्कृष्ट श्रेणी के यह सभी भित्ति चित्र डुग्गर की ऐतिहासिक, धार्मिक धरोहर का एवं परम्परा का प्रतिनिधित्व करते हैं तथा भारतीय संस्कृति में इन भित्ति चित्रों का विशिष्ट स्थान है। इन भित्ति चित्रों का डोगरा राजाओं के द्वारा करवाया गया है। इन भित्ति चित्रों में महाकाव्य ग्रन्थों, पौराणिक प्रसंगों पर आधारित प्रसिद्ध चित्रमालाएँ जम्मू राज्य के विभिन्न महलों, मन्दिरों में संरक्षित एवं संग्रहित हैं तथा पर्यटकों एवं दर्शकों के आकर्षण का केन्द्र है।

सन्दर्भः–

[1] स्वयं सर्वेक्षण तिथि–1 जून से 10 जून 2016.
[2] गोस्वामी, ओम तथा गुप्ता अशोक– डुग्गर दा सांस्कृतिक इतिहास, जे. एंड के. अकैडमी ऑफ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजिज, जम्मू, द्वितीय संस्करण–2015.
[3] Billawaria, A.K.- Jammu Wall Paintings, Jay Kay Book, Ist edition-1991, Jammu Tawi-180001(J&K).
[4] Kumar, Raj- Paintings And Lifestyles of Jammu Region (from 17th to 19th Century A.D.) Kalpaz Publications, Vol-2, Delhi-11005.

*Corresponding author.
E-mail address: aparnasrivastava747@ gmail.com